Nehru School Management Journal (NSMJ)
Volume No: 12, Issue No: 1, Year: 2025
PP: 64-73

ISSN: 2349-4883
Peer Reviewed & Refereed Journal
Journal Website: www.nsmj.in

'सात फेरे' में कोसी त्रासदी: एक विश्लेषण

पवन कुमार ठाकुर

शोधार्थी

(हिंदी विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा)

सारांश :–

'सात फेरे' उपन्यास में चन्द्रकिशोर जायसवाल ने ग्रामीण जीवन और कोसी नदी की त्रासदी का यथार्थ चित्रण किया है। इस उपन्यास में पलटू झा, बैजनाथ मंडल की चौथी शादी कराने के लिए सात बार अलग-अलग दिशाओं की यात्रा करते हैं। इस यात्रा के दौरान लेखक ने कोसी नदी की बाढ़ से जूझते समाज का आँखों देखा यथार्थ को दुनिया के सामने रखते हैं। कोसी नदी में जब बाढ़ लाती है तो उसके साथ चारों ओर भयावह तबाही भी आती है। किसान फसल को कोसी मैया की कृपा पर छोड़ देते हैं। बाढ़ आने पर लोग बाँध पर शरण लेते हैं, प्रत्येक वर्ष घर-बार उजड़ जाते हैं, खाने-पीने का सामान बह जाता है या पानी घर में जाने से खराब हो जाता है। कभी मवेशी तो कभी लोग बाढ़ में बह जाते हैं। इस दौरान सरकार और नेताओं की उपेक्षा, पत्रकारों का स्वार्थ और राहत कार्यों की अव्यवस्था भी स्पष्ट रूप से सामने आती है। बाढ़ में लोग चीखते-चिल्लाते जीवन की भीख माँगते हैं, गाँव जलमग्न हो जाते हैं, परिवार बिखर जाते हैं और बेघर लोग गठरी-मोटरी सिर पर लादे सुरक्षित स्थानों की ओर भागते हैं। राहत शिविरों नावों के माध्यम से फँसे लोगों को बचाने की कोशिशें होती हैं, लेकिन पानी की गहराई और भयावहता कई बार उन्हें विफल बना देती है। इस उपन्यास की एक विशेषता यह भी है कि इसमें लोकगीतों के माध्यम से बाढ़-पीड़ित समाज की सामूहिक वेदना और भावनाएँ अभिव्यक्त हुई हैं। इन लोकगीतों में बेटियों-बहुओं की पीड़ा, परिवार की असहायता, पति की चिंता और सुहाग की रक्षा की प्रार्थना जैसे भाव उभरकर सामने आते हैं। इस प्रकार लेखक कोशी के क्षेत्रीय यथार्थ को दुनिया के सामने रखते हैं।

बीज शब्द :– त्रासदी, जीविका, बाँध, सरकार, नेता, पत्रकार, लोकगीत, सामूहिक, रक्षा, सांस्कृतिक, पंडित।

प्रस्तावना–

'सात फेरे' चन्द्रकिशोर जायसवाल का प्रसिद्ध उपन्यास है। यह उपन्यास फुलकाहा गाँव के एक तिहाजू बैजनाथ मंडल के जीवन पर आधारित है। बैजनाथ मंडल ने तीन शादियाँ कीं, किंतु उनमें

© Copyright @ Authors

ISSN: 2349-4883
Peer Reviewed & Refereed Journal
Journal Website: www.nsmj.in

से एक भी पत्नी लंबे समय तक उसके साथ न रह सकी। पहली पत्नी (बरदाहावाली) बाँझपन का बोझ न सह पाने के कारण पोखर में कूदकर मर गई। दूसरी पत्नी (ललिया) अक्सर बीमार रहती थी और उचित इलाज न होने से उसकी मृत्यु हो गई। तीसरी पत्नी (महथीवाली) शादी के बाद मायके गई तो फिर कभी बैजनाथ मंडल के घर नहीं लौटी। बाद में वह मायके से ही किसी दूसरे युवक के साथ भाग गई। लड़की के घरवालों ने बैजनाथ को यह खबर भेजी कि उसकी मौत साँप के काटने से हो गई है। इन घटनाओं के बाद बैजनाथ मंडल तिहाजू कहलाने लगा। चौथी शादी के लिए वह लालायित हो उठा। इसके लिए वह पंडित पलटू झा के साथ सात बार अलग-अलग दिशाओं में गया, किंतु हर बार असफल होकर लौट आया। अंततः गाँव के लोगों ने मिलकर उसकी चौथी शादी संपन्न कराते हैं। इस उपन्यास में ग्रामीण जीवन की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक आदि समस्याओं का सजीव चित्रण किया गया है। साथ ही इसमें कोसी नदी की त्रासदी का मार्मिक चित्रण मिलता है।

भारत में अनेक नदियाँ बहती हैं, जिनमें कोसी नदी का विशेष महत्व है। यह नदी एक ओर बिहार की सभ्यता, संस्कृति और कृषि को जीवन देती है, वहीं दूसरी ओर जब विकराल रूप धारण करती है, तो कोसी क्षेत्र के लोगों ने बहुत पीड़ा पहुँचाती है। यही कारण है कि इसे 'बिहार का शोक' कहा जाता है। कोसी नदी बार-बार अपनी धारा बदलती रही है और हर वर्ष आने वाली बाढ़ से असंख्य गाँव, खेत और जीवन उजड़ते रहे हैं। इसी त्रासदी का मार्मिक यथार्थ चित्रण चन्द्रकिशोर जायसवाल ने अपने चर्चित उपन्यास 'सात फेरे' में किया है। इसमें कोसी अंचल के ग्रामीण जीवन का यथार्थ, वहाँ की पीड़ा, टूटा-बिखरा समाज और कठिन परिस्थितियों में भी जीवट बने रहने की भावना गहराई से अभिव्यक्त होती है।

'सात फेरे' उपन्यास में कोसी नदी और उसके तटवर्ती किसानों के जीवन-संघर्ष का अत्यंत मार्मिक चित्रण किया गया है। किसान हर वर्ष बाढ़ के भय से काँपते हुए भी अपनी जीविका की आशा को बनाए रखते हैं। जायसवाल जी लिखते हैं- "खेतिहर हर साल कोशी माँ से प्रार्थना करते थे, 'हे कोशी मैया! तुम्हें हमारा जो कुछ लेना हो ले लेना, मगर हमें भी इन खेतों से दो मुट्ठी अनाज लेने देना। इस कृपा के लिए हम तुम्हारे घाट पर जोड़ा छागर चढ़ाएँगे।"[1] कोसी क्षेत्र के किसान किस तरह अपनी उपज और जीवन को कोसी नदी के ऊपर छोड़ देते हैं। कोसी की महत्ता को भी इस उपन्यास में समझा जा सकता है।

[1] चन्द्रकिशोर जायसवाल- 'सात फेरे', पृष्ठ संख्या-584, प्रकाशक- भारतीय ज्ञानपीठ 18, इंस्टीट्यूशन एरिया, लोदी रोड नई दिल्ली-110032, पहला संस्करण: 2009, दूसरा संस्करण: 2012,

© Copyright @ Authors

जब कोसी नदी में बाढ़ आती है, तो चारों ओर त्राहि-त्राहि मच जाती है। लोग अपने घर-बार छोड़कर जान बचाने के लिए बाँध का सहारा लेते हैं। बाँध ही उनके लिए उस समय ठहरने का स्थल बन जाता है। बाढ़ में फँसे लोगों के भीतर असुरक्षा, भय और निराशा छा जाती है। उन्हें लगता है कि न जाने आगे क्या होगा। उनका घर उजड़ जाता है, खाने-पीने का सारा सामान नष्ट हो जाता है, पशुधन बह जाता है और जीवन की सारी मेहनत एक ही झटके में मिट्टी में मिल जाती है। ऐसे विकट के समय में सरकार केवल दिखावा करती है। नेता और अधिकारी हेलीकॉप्टर से उड़कर आ जाते हैं, सर्वेक्षण के नाम पर कुछ देर खड़े होकर चले जाते हैं, लेकिन वास्तविक राहत सामग्री भी लोगों तक नहीं पहुँचती। पत्रकार इस पीड़ा को अवसर बनाकर तस्वीरें खींचते हैं, रिपोर्ट लिखते हैं और अपने व्यवसाय को चमकाने में लगे रहते हैं। ऐसे में पीड़ित जनता के मन में स्वाभाविक रूप से आक्रोश पैदा होता है। लेखक ने इस मार्मिक स्थिति का यथार्थ चित्रण करते हुए लिखते हैं- “बाँध के आगे बाढ़ का पानी फैला हुआ था और उसका कोई छोर दिख नहीं रहा था। बाँध पर खूब गहमागहमी थी। लोगों के गोल-गोल, छोटे-छोटे समूह बाँध पर बिखरे हुए थे। जहाँ सड़क बाँध को छूती थी...बाँध पर पड़े लोग कई दिनों से भारी गुस्से में हैं। नेताओं के हवाई जहाज आकाश में उड़कर चले गये हैं, मगर राहत का कोई सामान आज तक नहीं पहुँचा है। सरकार ने उन्हें मरने के लिए छोड़ दिया है।...हम मर रहे हैं और यह साले सब आते हैं, अपना धंधा करने। ये हमारी करुण गाथा अखबारों में छापेंगे, हमारी तस्वीरों की प्रदर्शनी लगाएँगे, नाम और पैसा कमाने के लिए। हमारे लिए क्या करने आये थे यहाँ? हमारे लिए सरकार से राहत लेकर आते।”[2] यहाँ सब दाने-दाने के लिए तरस रहे हैं।

लेखक ने ‘सात फेरे’ उपन्यास में बाढ़ की उस स्मार्मिक स्थिति का चित्रण किया है जिसमें जलप्रलय के बीच लोगों की असहायता और मृत्यु का भय स्पष्ट झलकता है। वे लिखते हैं-“अब देख रहे हैं कि बहुत से लोग पानी में डूब-उतरा रहे हैं?”...अब पानी की तेज धारा में बही जा रही हैं फूस की छतें?”...“उन छतों पर बैठे लोग चीख-चिल्ला रहे हैं, ‘बचाओ, बचाओ’?”[3] यह दृश्य पाठक को भीतर तक झकझोर देता है।

जब कोसी नदी में बाढ़ आती है तो असंख्य गाँव जलमग्न हो जाते हैं, अनेक परिवार बिखर जाते हैं और लोग भारी विपत्तियों का सामना करने को विवश हो जाते हैं। कोसी क्षेत्र की जनता अपने सिर पर गठरी-मोटरी लादे सुरक्षित स्थानों की ओर भागने लगती है। ऐसी स्थिति में वे सब बेघर होने लगते हैं, इस भयावह यथार्थ का वर्णन करते हुए चन्द्रकिशोर जायसवाल लिखते हैं-“कितने गाँव

[2] चन्द्रकिशोर जायसवाल- ‘सात फेरे’, पृष्ठ संख्या-585-586,

[3] चन्द्रकिशोर जायसवाल- ‘सात फेरे’, पृष्ठ संख्या-589

© Copyright @ Authors

ISSN: 2349-4883
Peer Reviewed & Refereed Journal
Journal Website: www.nsmj.in

जलमग्र हुए और कितने लोग तबाह हुए, मगर तब सारा पानी सिर्फ अखबार पर नजर आया था, और महेश्वरपुर में भी उनकी जगह इस ओर नहीं गई थी कि डूबे गाँवों के लोग सपरिवार सिर पर गठरी-मोटरी लादे भाग-भागकर वहाँ पहुँते हुए हैं। एक बाँस पानी का उबाल वहाँ पहुँचा हुआ था। वह पूरा इलाका इस कस्बे की छोटी- सी तस्वीर में समा गया था।"[4] बाढ़ के समय सरकार का सबसे पहला दायित्व होता है कि बाढ़ग्रस्त गाँवों के लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाया जाए। राहत शिविरों में भोजन, वस्त्र, ठहरने की व्यवस्था करवाना, कोसी क्षेत्र के लोगों को आर्थिक सहायता प्रदान करना, सरकार की प्राथमिक जिम्मेदारी होनी चाहिए।

चन्द्रकिशोर जायसवाल जी एक युवक के माध्यम से बाढ़ में फँसे लोगों की पीड़ा को दुनिया के सामने रखते हैं। वे लिखते हैं-"मेरा गाँव पानी में डूब गया; घर पानी के ऊपर बह गया होगा। मेरा परिवार के सारे लोग पानी में फँसे हुए हैं। कौन कहाँ हैं किस हाल में हैं, कुछ मालूम नहीं।"[5] इस प्रकार 'सात फेरे' उपन्यास में चित्रित कोसी मानवीय रिश्तों को गहरे स्तर पर प्रभावित करती है। परिवार से बिछुड़ने और अपनों को खो देने का भय बाढ़ग्रस्त जीवन की सबसे बड़ी पीड़ा बनकर सामने आता है।

कोसी नदी में बाढ़ आने पर कुछ राहत कार्य भी चलाए जाते हैं। यह कार्य किसी ऊँचे स्थान पर विशेषकर सरकारी विद्यालयों में संचालित होते हैं, जहाँ खाने-पीने का सामान सुरक्षित रखा जाता था और बाढ़ से पीड़ित व्यक्तियों के लिए पंडाल लगाए जाते हैं ताकि वे वहाँ शरण ले सकें। इसका यथार्थ चित्रण लेखक ने बड़े मार्मिक ढंग से किया है। वे लिखते हैं-"राहत-कार्य दो भागों में बँटा हुआ था, एक भाग था शिविर में टिके शरणार्थियों को खाना खिलाना और दूसरा था अभी भी पानी के बीच फँसे लोगों तक राहत पहुँचाना।...विद्यालय के आस-पास कई पंडाल लगे हुए थे; एक स्वयंसेवकों के लिए था, शेष में शरणार्थियों को टिकाया गया था। एक पंडाल विद्यालय से सटाकर पीछे की ओर लगाया गया था जिसमें रसोई बनती थी। पानी में फँसे लोगों के पास नाव से जाना होता था। हर नाव पर चार स्वयं सेवकों की एक टोली रहती थी। नाव सुबह-सुबह सामग्री लादकर निकलती थी और शाम तक वापस आ जाती थी।"[6]

बाढ़ में जो लोग जल-प्रलय में फँसे हुए हैं, उन्हें जीने के लिए कुछ भोजन मिल सके और जिनका परिवार बिछड़ गया है, उनकी भी यथासंभव सहायता हो सके। इस मानवीय पहल का जीवंत चित्रण लेखक करते हैं। वे लिखते हैं- "आप लोग बेना जा रहे हैं, तो थोड़ा आगे चकाई तक चल

[4]चन्द्रकिशोर जायसवाल- 'सात फेरे', पृष्ठ संख्या-**593**

[5] चन्द्रकिशोर जायसवाल- 'सात फेरे', पृष्ठ संख्या-**598**

[6] चन्द्रकिशोर जायसवाल- 'सात फेरे', पृष्ठ संख्या-**596**

© Copyright @ Authors

जाइएगा। वहाँ बहुत लोग फँसे हुए हैं...झौसा से ही पूरब की ओर नजर आ जाएगा बोकरा का भीटा; उधर जरूर नजर डाल लीजिएगा...बेना के रास्ते में ही अवध भगत का पोखर है; उसके मुँडेरा पर भी कुछ लोग शरण लिए हुए दिख जाएँगे...बैगना से ज्यों ही आगे बढ़िएगा, दक्खिन की तरफ एक बहुत बड़ा बगीचा नजर आएगा। बहुत ऊँची जमीन पर है यह बगीचा। ध्यान दीजिएगा कि उधर से लोग चिल्लाकर आप लोगों को हाँक तो नहीं लगा रहे हैं...चकाई के पास ही बेलागंज है, थोड़ा ही आगे...नाव के डाँड़ पकड़ते ही मल्लाह ने जयनाद किया, "कोशी महारानी की जय हो! रन्नू सरदार की जय हो!"[7] लेखक बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों का ऐसा चित्र प्रस्तुत करते हैं, मानो पाठक स्वयं उस दृश्य का प्रत्यक्षदर्शी हो। लेखक बताते हैं कि लोग कहीं पोखर की मुंडेर पर, कहीं बगीचे की ऊँची जमीन पर, तो कहीं भीटे या पेड़-पौधों के सहारे शरण लेकर जीवन बचाने का प्रयास कर रहे हैं।

जब नाव पानी में फँसे लोगों तक राहत पहुँचाने जाती है, तो कहीं-कहीं पानी इतना गहरा और भयावह होता है कि नाव का किनारे तक पहुँचना संभव ही नहीं हो पाता। ऐसी स्थिति में मजबूरीवश खाने-पीने के सामान के थैले पानी के ऊपर से फेंककर लोगों तक पहुँचाए जाते हैं। "मल्लाह ने बताया..."मुँडेरा के नीचे हाथी-डुबाव पानी है।" कुछ और आगे बढ़ाकर मल्लाह ने नाव खड़ी कर दी। विश्वनाथ ने स्वयंसेवकों को अभागों की ओर राहत के थैले फेंकने का आदेश दिया और स्वयं प्रक्षेपण का निरीक्षण और अगला आदेश सुनाने के लिए चुपचाप खड़ा रहा।"[8] राहत सामग्री बाढ़ में फँसे लोगों के लिए जीवनदान का साधन है, वह भी कभी उनकी पकड़ से दूर पोखर में बह जाती और कभी नाव से ही गिरकर पानी में डूब जाती।

बाढ़ से पहले कोसी क्षेत्र के लोग हर वर्ष अपने घर-परिवार की सुरक्षा करने में लग जाते हैं। बाढ़ का पानी आते ही गाँव की जिंदगी तहस-नहस हो जाती है। इसलिए वहाँ लोग सावन लगते ही बेटियाँ और बहुएँ मायके भेज देते हैं, ताकि वे बाढ़ की त्रासदी और असुविधाओं से दूर रह सकें। चन्द्रकिशोर जायसवाल लिखते हैं-"हर साल सावन के पहले ही बेटी और बहू दोनों को विदा कर देता था। इस साल बेटी तो चली गयी, बहू की विदाई नहीं हो पायी। बेटा दिल्ली में है। समधी ने किसी को भेजा नहीं विदाई के लिए। मैं समधी के आसरे बैठा रह गया। जब घर आधा डूब गया, तब बहू को और नहीं रोका। गाँव से और भी लोग गेरुलिये से भाग रहे थे। मैंने गेरुलिया पर बहू को बैठाकर उसके हाथ लग्गा थमाया और बोला, 'बेटी ! भगवान का नाम लेकर नदी पार कर जाओ। मैं पीछे से आ रहा हूँ।' कहा, मगर जा नहीं पाया। घर बचाने में लगा रहा। जब घर डूब गया,

[7] चन्द्रकिशोर जायसवाल- 'सात फेरे', पृष्ठ संख्या-602-603

[8] चन्द्रकिशोर जायसवाल- 'सात फेरे', पृष्ठ संख्या-605

© Copyright @ Authors

ISSN: 2349-4883
Peer Reviewed & Refereed Journal
Journal Website: www.nsmj.in

तब कोई गेरुलिया भी नहीं बना पाया अपने लिए और तैरकर इस बगीचे तक आ पाया।"[9] इतना ही नहीं, आगे पोदन दास गाते हैं-

"चढ़ते सावन हे भादो भइया अइले हे लियोनमा
कउन विधि जइबइ हे सखिया, भाय ते ने हे बहिनिया
काटबै में सामर हे सिकिया, मेहरबै में गेरुलिया
ओहि चढ़ि जइबइ हे सखिया, भाय ते ने हे बहिनिया
बीच ही समुद्र हे सखिया, टूटि गलै हे गेरुलिया
हमहूँ जे भेलियै हे सखिया, वन के हे कोयलिया
भैया मोरा भेलै हे सखिया, कोशी माय के हे संदेसबा
आमा मोरा कहतै जे होइतै, बेटी बसे हे ससुरबा

सासु मोरा कहतै जे होइतै, पुतहू गइले हे नैहरबा।"[10] यह गीत बाढ़-पीड़ित ग्रामीण समाज की भावनात्मक संवेदनाओं और रिश्तों की कसक को उजागर करता है। गीत की पंक्तियों में बेटी का दर्द, बहू की पीड़ा और परिवार की असहायता गहराई से झलकती है।

चन्द्रकिशोर जायसवाल ने 'सात फेरे' उपन्यास में कोसी नदी की बाढ़ के दृश्य को अत्यंत यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है। उदाहरण के लिए "हमने देखा है कि पानी दौड़ा चला आ रहा है और जगह-जगह भँवरें पैदा हो रही हैं। भँवरें कभी छोटी होती हैं और कभी कभी बहुत बड़ी-बड़ी। जमीन पर दौड़ता पानी कहीं बीच में ही बँट जाता है। पानी के साथ उसका पीले-उजले रंग का फेन दौड़ रहा है, चक्कर काट रहा है। पानी में मछलियाँ उछल रही हैं। भरना पड़ रहा है और उस टापू पर जीव-जन्तु जमा हो रहे हैं।"[11] पानी का तीव्र बहाव, जगह-जगह बनने वाले भँवर और उसमें फँसते जीव-जंतु, यह सब प्रकृति की असीम शक्ति और उसके सामने मनुष्य की निस्सहाय स्थिति को व्यक्त करता है। कोसी नदी का यह रूप ग्रामीण जीवन की जड़ों को हिला देने वाला है। लोग अपने घर, खेत और पशुधन को बचाने के लिए संघर्ष करते हैं, किंतु बाढ़ के पानी में सब कुछ डूबता चला जाता है।

[9] चन्द्रकिशोर जायसवाल- 'सात फेरे', पृष्ठ संख्या-**613-614**

[10] चन्द्रकिशोर जायसवाल- 'सात फेरे', पृष्ठ संख्या-**614**

[11] चन्द्रकिशोर जायसवाल- 'सात फेरे', पृष्ठ संख्या-**622**

© Copyright @ Authors

ISSN: 2349-4883
Peer Reviewed & Refereed Journal
Journal Website: www.nsmj.in

सिंहेश्वर महादेव मंदिर कोसी क्षेत्र का एक प्रमुख धार्मिक स्थल है, जहाँ दूर-दूर से आकर श्रद्धालु भगवान शिव की आराधना करते हैं। लेकिन कोसी मैया किसी को नहीं छोड़तीं, चाहे वह सामान्य इंसान हो या देवस्थान। लेखक इस यथार्थ को रेखांकित करते हुए लिखते हैं-"उसने तो सिंहेश्वर महादेव को भी नहीं बख्शा था और वहाँ भी कटनियाँ लगा दिया था।"[12] कोसी का यह विनाशकारी स्वरूप दर्शाता है कि उसके सामने मनुष्य की शक्ति और उसकी आस्था दोनों ही नगण्य पड़ जाती हैं। ग्रामीण समाज इसे देवी मानकर पूजता है, फिर भी हर साल उसकी प्रलयंकारी धारा लोगों की मेहनत, सपनों और विश्वासों को बहा ले जाती है।

कोसी इलाके में बाढ़ की विभीषिका और उससे उपजे लोकजीवन के गीतों को लेखक मार्मिक ढंग से चित्रित किया है। जैसे- "रात के तीसरे पहर में बाबा ने गीत छेड़ दिया,

सगरे समैया कोशी माय हँसि खेलि बितेलियै से भादो मासे

कोसी माय लागै छै पहाड़ से भादे हे मासे

एक तै अन्हार राति, दोसर बसात घाती सूझै नाहि

मैया गे रेत के बहाव से सूझै नाहि

मलरि-मलरि कोशिका करै अनघोल से नदी बीचे

कोशी मैया मन डरपाय से नदी बीचे

फाटल नैया कोशी माय गून पतबार टूटि गेलै

मैया गे लागहू गोहरि से दया करू

गोड़ लागौं पैयाँ पड़ौं मैया सतवन्ती से राखि लेहू

मैया गे हमर सोहाग से राखि लेहू..."[13] यह लोकगीत बाढ़ की भीषणता और उसके प्रति ग्रामीण समाज की संवेदना को प्रकट करता है। इसमें जहाँ एक ओर कोसी मैया को देवी के रूप में पुकारा गया है, वहीं दूसरी ओर उससे दया और करुणा की याचना भी की जाती है। गीत में अंधेरी रात, प्रचंड बारिश, रेतीले बहाव और फटी नाव का चित्रण एक साथ भय और असुरक्षा की अनुभूति कराता है।

'सात फेरे' उपन्यास में लेखक पोदन दास पात्र के माध्यम से बाढ़ का यथार्थपरक चित्रण करते हैं वे लिखते हैं- "बाढ़ जब जाती है, तो कहीं मिट्टी भरकर 'भरना' बनाती है और कहीं मिट्टी खोदकर

---

[12] चन्द्रकिशोर जायसवाल- 'सात फेरे', पृष्ठ संख्या-**615**

[13] चन्द्रकिशोर जायसवाल- 'सात फेरे', पृष्ठ संख्या-**628**

© Copyright @ Authors

ISSN: 2349-4883
Peer Reviewed & Refereed Journal
Journal Website: www.nsmj.in

कुंड बना जाती है। कुंड तो कुंड ही है, यह भरना भी बहुत खतरनाक होता है। इसकी दलदल में गाय-भैंस ही नहीं, आदमी भी फँसकर जान से हाथ धो बैठते हैं। अपने बचपन में मैंने तो एक हाथी को भी इस दलदल में धँसते देखा था।"[14] यह चित्रण कोसी क्षेत्र की आंचलिक यथार्थ को दुनिया के सामने लाने का सफल प्रयास है।

कोसी क्षेत्र के लोग कोसी मैया को खीर, पान, भोजन और बकरे की बलि देकर कोसी मैया को प्रसन्न करने का प्रयास करते हैं ताकि बाढ़ जैसी विपत्ति से रक्षा हो सके। किंतु विडंबना यह है कि हर वर्ष प्रलयंकारी धारा उनकी मेहनत, सपनों और विश्वासों को बहा ले जाती है। लोककथाओं में तो यहाँ तक कहा जाता है- "कोशी की धारा में सिन्दूर भी फेंका। वह कुँआरी है, इसलिए लोग उसकी ओर सिन्दूर फेंककर भी उसे भगाते हैं। और गाँवों से भागी हो वह सिन्दूर डर से, हमारे अमरपुर से तो नहीं भागी।"....

कोशी के माथ पर टीका शोभत है,

सिनुरा सोहत अजब रंग हे कोशी माय

खेलत है चौंहटिया।"[15] परंतु जब यही कोसी मैया अपना प्रचंड रूप दिखाती है, तो लोग घर से बेघर हो जाते हैं, गाँव उजड़ जाते हैं और कई परिवार तहस नहस हो जाते हैं। कोसी से पीड़ित महिला जब कोसी मैया को अपनी पीड़ा लोकगीत के माध्यम से व्यक्त करती है तो उसमें उनकी पीड़ा बहुत ही मार्मिकता के साथ देखने को मिलती है। जब वे घर-गाँव छोड़कर विदा होती हैं, तो कोसी को गाली देती हुई कहती हैं-

"कथी बिनु आहे कोशिका मुँहमाँ मलिन भेलो

कथी बिनु डोलै हे शरीर

पान बिनु आहो सेवक मुँहमाँ मलिन भेलै

लड्डु ले डोलैये शरीर

चढ़इबौ कोशी माय खीर पान भोजन

पाठा देबौ कोशी माय चढ़ाय

गावल सेवक जन दुहु कल जोड़ि

[14] चन्द्रकिशोर जायसवाल- 'सात फेरे', पृष्ठ संख्या-**623**

[15] चन्द्रकिशोर जायसवाल- 'सात फेरे', पृष्ठ संख्या-**616**

© Copyright @ Authors

ISSN: 2349-4883
Peer Reviewed & Refereed Journal
Journal Website: www.nsmj.in

बिपति के बेरी मैया कोशिका होखु ने सहाय।"[16] आगे चन्द्रकिशोर जायसवाल लिखते हैं-

"सात बालक कोशी माय, सातो हरि लेलन

आठम के भरोसा नाहि हे

नून तेल पायब कोशी माय

गोदी के बलकबा कैसे पायब हे..."[17] इस प्रकार जायसवाल जी ने कोशी नदी की त्रासदी का चित्रण किया है एक ओर वह मिथिला की सांस्कृतिक आस्था का केन्द्र है, तो दूसरी ओर वह त्रासदी का ऐसा रुप है जो ग्रामीण जीवन को भय, पीड़ा और क्षोभ से भर देता है।

जब बाढ़ आती है तो जान-माल का भारी नुकसान होता है, लोग बेघर होते हैं, खेत-खलिहान डूब जाते हैं। इतना कुछ झेलने के बाद भी कोसी को क्षेत्रीय समाज उसके गीत गाते हैं, उसकी पूजा करते हैं। जब बाढ़ उतर जाती है, तो वही नदी नयी मिट्टी, उपजाऊ जमीन और आने वाले दिनों के लिए फसल की आशा देती है। यही विश्वास लोगों को उससे जोड़े रखता है। जब बाढ़ आती है तो एक ओर तो नुकसान भी बहुत होती है दूसरी ओर आशा का भी किरण झलकती है। उसका लेखक पोदन दास पात्र के माध्यम से वे लिखते हैं- "जब यह कोशी इतनी मार-काट मचाती है, तो फिर आप लोग उसके गीत क्यों गाते, उसकी पूजा क्यों करते हैं ?"

पोदन दास ने पलटू पर निगाह टिकायी और बोले, "माँ को नहीं पूजें?"

"यह माँ हुई?"

"हाँ, पलटूजी, गुस्से में आ गयी माँ," पोदन दास के स्वर में तरलता आ गयी, "यही माँ तो गुस्सा उतर जाने पर फिर हमें हाँक लगाती है, 'आ जाओ, बेटो ! तुमने दो मुट्ठी अनाज माँगा था, मैं तुम्हें चार मुट्ठी दूँगी।' इस माँ को हम नहीं पूजें?"[18] लेखक ने पोदन दास और पलटू झा पात्र के माध्यम से यह दिखाया है कि कोसी अंचल का समाज कोसी को दंड देने वाली और आशीर्वाद देने वाली दोनों ही रुपों में स्वीकार करता है। यही आस्था उन्हें आपदा के बीच भी आशावान बनाए रखती है।

[16] चन्द्रकिशोर जायसवाल- 'सात फेरे', पृष्ठ संख्या-615

[17] चन्द्रकिशोर जायसवाल- 'सात फेरे', पृष्ठ संख्या-617

[18] चन्द्रकिशोर जायसवाल- 'सात फेरे', पृष्ठ संख्या-621

© Copyright @ Authors

ISSN: 2349-4883
Peer Reviewed & Refereed Journal
Journal Website: www.nsmj.in

निष्कर्ष :–

चन्द्रकिशोर जायसवाल ने 'सात फेरे' उपन्यास में कोसी नदी की त्रासदी का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है, जिसमें बिहार के ग्रामीण जीवन का संघर्ष, पीड़ा और जीवटता पूर्ण यथार्थ के साथ उभरता है। 'बिहार का शोक' कही जाने वाली कोसी नदी जब विकराल रूप धारण करती है तो पूरे समाज को झकझोर देने वाली प्रकृति त्रासदी बन जाती है। बाढ़ग्रस्त किसानों का भय, निराशा, असुरक्षा और विस्थापन जहाँ एक ओर उनकी विवशता को दर्शाते हैं, वहीं कठिन परिस्थितियों में जीवित रहने की उनकी जिजीविषा मानव-जीवन की अदम्य शक्ति का परिचायक है। इस उपन्यास में बाढ़ के दौरान उजड़ते गाँव, बिखरते परिवार, टूटते रिश्ते और मौत का भय पाठक को भीतर तक झकझोर देता है। किसानों की बेबसी इस बात से झलकती है कि वे अपनी पूरी उपज और जीवन नदी की दया पर छोड़ देते हैं। लेखक इस उपन्यास के माध्यम से कोसी क्षेत्र के सामाजिक-राजनीतिक ताने-बाने की कमजोरियों को भी सामने लाती हैं। सरकारी राहत कार्य भी अक्सर दिखावे तक सीमित रह जाते हैं, जिससे पीड़ित जनता का आक्रोश स्वाभाविक है। फिर भी इस त्रासदी के बीच सामूहिक सहयोग, मानवीय संवेदनाएँ और लोकजीवन की परंपराएँ जीवन को संबल देती हैं। लोकगीतों में बेटी-बहू की पीड़ा, परिवार की कसक और रिश्तों की गहराई हृदय को स्पर्श करती है। अतः 'सात फेरे' उपन्यास केवल एक कथा न होकर कोसी अंचल की त्रासदी का गहन विश्लेषण है, जो पाठकों को यह सोचने पर विवश करता है कि प्राकृतिक आपदाएँ रोकना शायद संभव न हो, किंतु संवेदनशील शासन, सामूहिक सहयोग और मानवीय संवेदना से इनके प्रभाव को अवश्य कम किया जा सकता है।

© Copyright @ Authors